संचार प्रहरी

निज भाव-व्यथा को, अन्तः-करण से गाता हूँ,
उथल -पुथल दुर्गम राहों पर, चलता चला जाता हूँ ,
धूप -धूल आंधी वर्षा को, सहर्ष झेल जाता हूँ,
यूँ ही नहीं मैं, संचार प्रहरी कहलाता हूँ |

पग-पग पथ पर कंकड़ -पत्थर,
हाथ में संचारी -ध्वजा को लेकर,
हर -क्षण हर -पल हंसकर गाकर,
पथ पर अगणित पग -शूल खाकर,
तब,लक्ष्य - दूरभाषी भेद पाता हूँ,
यूँ ही नहीं मैं,संचार- प्रहरी कहलाताहूँ।

अथक परिश्रम किया हमेशा,
मन में रखा ना कोई निराशा,
दिन भर दिन ने दिया दिलासा,
रात्रि हुआ, मन भरा जरा सा,
रैन बसेरा पथ पर करने को,
दूधिया आंचल चाँद बिछाये,
मंद -मंद मालवा की हवाएं ,
विप्र -जनों की प्यास बुझाये,
कल -कल करती पंज-दरियायें,
मईया जैसी लोरी सुनाये,
हमने ना देखी रात दिवाली,
होली पथ पर ही गाता हूँ,
प्रिय-जनों का विभिन्न निमंत्रण,
हाथ जोड़ ठुकराता हूँ |
यूँ ही नहीं मैं, संचार प्रहरी कहलाता हूँ ||-

सिंचा है **उपवन** को पल पल,
सिंचा है हर कोने का फूल,
तुम हो उगते किरणों जैसे,
नई आशाओ कि नई **बिगूल**,
हम अब **गोधूलि** किरणों जैसे,
जाते हुए आखिरी कुल,
धैर्य जमा कर चलते रहना,
हमें न जाना पर तुम भूल,
अटल हमारा विश्वास है तुम पर,
कि, चटा सकते हो गद्दारो को धूल,
वही नई उमंग और नई जोश से,
खुली खिड़की पर **अंक** निहारता हूँ,
'निगम' के **पुनरोद्धार** में **आहुति** यही चढ़ाता हूँ,
बस चलती रहे **आवृत्ति** निरन्तर,
लो, **सेवानिवृत्ति** का पथ अपनाता हूँ,
यूँ ही नहीं मैं, संचार प्रहरी कहलाता हूँ ||

तरंग रस

उठो, डटो, ना हटो 'नव- प्रहरी'!,
वो वक्त तुम्हारा आयेगा,
"संचारश्री-' का पुष्प ,
तेरे राहों में खिल जायेगा |
संकल्प करो, निर्भीक बनो,
षड्यंत्र है काम भयभीतों का,
विलक्षण लालिमाओं वाले,
उगते हुये सूरज हो कल का |
'नव सहस्त्र' भुजाओं से ,

जब तरंग परचम लहरायेगा,

कदमें। में होगा विश्व,

तेरा सम्मान लौट आयेगा ||

कोलाहल यहाँ व्यर्थ बहुत है,
चहुँओर फैली ग़दर बहुत है,
'संघे शक्ति' अभाव बहुत है,
आपस में अविश्वास बहुत है ,
शंकायें- घटा घनघोर बहुत है,
इस अँधियारे को **चीरना** होगा,
आओ मिलकर हाथ बढ़ाये,
अपने संचार -शस्त्र उठायें,
इस खुले ताल को मुट्ठी बनायें,
और, तरंग-त्रासदी को दूर भगायें

सबको मिलकर जुझना होगा,
भेदभाव, आलस्य मिटाकर,
नई आशाओं की दीप जलायें |
गाँधी, बुद्ध, महावीर धरा से,
आईए यह आवाहन चलायें,
‘निगम’ के कोने -कोने से,
सौ -सौ संचार-वीर जगायें।

जनमानस के अंतरंग पर,
आईए यह तरंग रस लिख जायें ,
निश्छल, निष्काम, निष्कपट भाव से,
यूँ ही पथ पर चलते जायें।
राष्ट्रहित उत्थान में एक नया अध्याय बनायें,
कि, 'निगम संचार' के संरक्षण में,
आईए 'संचार प्रहरी 'बन जायें ||

****

दुर्गेश सिंह
उप मण्डल अभियंता
(मार्केटिंग सॉउथ)
कलकत्ता टेलीफोन
मोबाइल- 9417606162

शब्दार्थ

आवृत्ति -Frequency (of BSNL)	**तरंग -रस –(like VEER RAS)** one kind of poem to motivate & energize to the peoples of communication's field
संचार -प्रहरी -protector of communication,	संचार श्री- **Award in BSNL**
अन्तः-करण -inner	विलक्षण -unique,
दुर्गम -inaccessible	नव -सहस्त्र भुजा -thousand arms of young employee
सहर्ष –happly	**तरंग** -wave,
संचार -ध्वज -flag of communication	चहू ओर –all around
लक्ष्य -दूरभाष -telecom target	ग़दर -revolt ,
रैन –night	शंका -doubt,
दूधिया –milky	**संचार -शास्त्र** -tools/technology related to the field of communication
मालवा -A region of punjab,	**तरंग -त्रासदी** - telecom stress/crunch
विप्र -जन -tired people	**संचार -वीर** -brave/diligent telecom officer
कल -कल -sound of water	अंतरंग –inner
पंज-दरिया -Five river of Punjab,	निश्छल –sincere
सींचना -nourishment	निष्काम -flawless,
उपवन -garden(BSNL)	निष्कपट- honest
बिगूल - voice(musical instrument)	उत्थान -progress,
गोधूलि - sunset(evening),	संरक्षण -protection,
खिड़की - window (Ess portal),	सेवानिवृति- retirement
अंक - marks(VRS amount)	
पुनरोद्धार -Revival,	
आहुति -sacrifice	

Central idea- I --- The poem **'संचार प्रहरी'** describes the tough duty and responsibility of Telecom officers/staffs/workers, this poem is mainly based on those people who works in outdoor/external and maintenance/project areas to keep telecom services uninterrupted.

Stanza 1-2 of poem describes about how officers/staff/workers feels physical and mental stress while performing their duties.

Stanza -3 of poem describes about how these officers/staff/workers continues their job from day to night to restore the telecom services , beauty of nature is also filled during night hours when these people were working tirelessly, Also describes how officers/staff/workers sacrifices their personal life as well as festivals in the interest of services.

Stanza-4 of poem describes about ongoing VRS and revival scenario in BSNL , in this stanza feeling of VRS opted along with their message to the rest of employees is conveyed .

Central idea- II --- The central idea of **'तरंग -रस'** is to motivate and energize the young employees of BSNL to handle post VRS and telecom stress scenario.

DURGESH SINGH
MARKETING SOUTH
CALCUTTA TELEPHONES

It gives me immense pleasure to convey you all that the set of poetry (1. **'संचार प्रहरी'** 2. **'तरंग -रस'**) written down in the field of Tele-communication It became possible due to happiness and smiles on the face of my six year daughter **'SWASTIKA'** while listening my poems, given me enough motivation to write these onwards.

::::::::::Regards::::::::::

मेरी आवृत्ति

(काव्य संग्रह)

दुर्गेश सिंह